वैश्विक भुखमरी और यूक्रेन में युद्ध

यूक्रेन में चल रहे युद्ध और रूस के ख़िलाफ़ संयुक्त राज्य अमेरिका व पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने, दुनिया में खाद्य, उर्वरक और ईंधन की क़ीमतों को आसमान तक पहुँचा दिया है तथा विश्व खाद्य आपूर्ति को ख़तरे में डाल दिया है। यह टकराव वैश्विक भुखमरी के मौजूदा संकट को बढ़ा रहा है और अरबों लोगों -विशेष रूप से दक्षिणी गोलार्ध में लोगों- के जीवन स्तर और कल्याण को ख़तरे में डाल रहा है ।

'दुनिया के रोटी की टोकरी' में चल रहा युद्ध

रूस और यूक्रेन मिलकर दुनिया भर में उत्पादित होने वाली गेहूँ का लगभग 30 प्रतिशत और कुल कैलोरी का लगभग 12 प्रतिशत उत्पादन करते हैं। पिछले पाँच सालों से, ये दोनों देश दुनिया के मक्के का 17 प्रतिशत, जौ (पशु आहार के एक महत्वपूर्ण स्रोत) का 32 प्रतिशत, और सूरजमुखी तेल (कई देशों में खाना पकाने के लिए महत्वपूर्ण रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला तेल) का 75 प्रतिशत उत्पादित कर रहे हैं। इन सबके साथ-साथ, रूस उर्वरकों (फ़र्टिलायज़र) और प्राकृतिक गैस (उर्वरक उत्पादन के एक प्रमुख घटक) का दुनिया में सबसे बड़ा निर्यातक है; नाइट्रोजन उर्वरकों का 15 प्रतिशत, पोटाश उर्वरकों का 17 प्रतिशत, प्राकृतिक गैस का 20 प्रतिशत वैश्विक व्यापार रूस से होता है।

मौजूदा संकट से वैश्विक खाद्य आपूर्ति में कमी आने का ख़तरा है। संयुक्त राष्ट्र ने अनुमान लगाया है कि यूक्रेन की लगभग 30 प्रतिशत कृषि भूमि युद्धक्षेत्र बन सकती है; इसके अलावा, रूस के ख़िलाफ़ लगे प्रतिबंधों ने रूस को खाद्य पदार्थ, उर्वरक और ईंधन का निर्यात करने में गंभीर रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया है। इससे वैश्विक क़ीमतों में उछाल आया है। युद्ध शुरू होने के बाद से, गेहूँ की क़ीमतों में 21 प्रतिशत, जौ में 33 प्रतिशत और कुछ उर्वरकों की क़ीमतों में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

दक्षिणी गोलार्ध के देश 'पिस रहे हैं'

इस झटके का दर्दनाक असर दुनिया भर के लोग महसूस कर रहे है, लेकिन इसका सबसे ज़्यादा असर दक्षिणी गोलार्ध के देशों में पड़ा है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने हाल ही में टिप्पणी की कि 'एक शब्द में कहें तो, विकासशील देश पिस रहे हैं'।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 45 अफ्रीकी और 'सबसे कम विकसित' देश रूस या यूक्रेन दोनों में से किसी से अपनी कुल गेहूँ उपभोग का कम से कम एक तिहाई आयात करते हैं -इनमें से 18 देश कम से कम 50 प्रतिशत आयात करते है। दुनिया का सबसे बड़ा गेहूँ आयातक देश, मिस्र, रूस और यूक्रेन से अपने आयात का 70 प्रतिशत से अधिक प्राप्त करता है, जबकि तुर्की 80 प्रतिशत से अधिक प्राप्त करता है।

दक्षणिी गोलार्ध के देशों में अभी से ही क़ीमतों के बड़े झटके और आपूर्ति की कमी सामने आने लगी है, जिससे खपत और उत्पादन दोनों प्रभावित हो रहे हैं। केन्या में, कुछ क्षेत्रों में ब्रेड की क़ीमतों में 40 प्रतिशत और लेबनान में 70 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। और इस बीच, दुनिया में सोयाबीन का सबसे बड़ा उत्पादक, ब्राज़ील, फ़सल की पैदावार में बड़ी कमी का सामना कर रहा है। ब्राज़ील अपने पोटाश उर्वरक में से लगभग आधा हिस्सा रूस और पड़ोसी बेलारूस से ख़रीदता है (और बेलारूस पर भी प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं), और इसके पास केवल तीन महीने की सप्लाई बची है तथा किसानों को कम उर्वरक ख़र्च करने का निर्देश दिया जा रहा है।

'संयुक्त राज्य अमेरिका ने पूरी दुनिया में प्रतिबंध लगा रखा है'

अमेरिका और रूस के ख़िलाफ़ पश्चिमी प्रतिबंधों से स्थिति सीधे तौर पर ख़राब हो रही है। हालाँकि प्रतिबंधों को यह कहकर उचित ठहराया गया है कि इनसे रूसी सरकार के नेताओं और अभिजात वर्ग को निशाना बनाया गया है, जबकि इस तरह के उपायों से सभी लोगों, विशेष रूप से कमज़ोर समूहों को सबसे अधिक नुक़सान होता है और इसका वैश्विक प्रभाव पड़ता है।

एक अफ़गान आयात कंपनी के निदेशक नूरुद्दीन ज़कर अहमदी ने संयुक्त राज्य अमेरिका की इस कार्रवाई के प्रभाव का आकलन करते हुए कहा: 'संयुक्त राज्य अमेरिका सोचता है कि उसने केवल रूस और उसके बैंकों पर ही प्रतिबंध लगाया है। लेकिन संयुक्त राज्य अमेरिका ने पूरी दुनिया पर प्रतिबंध लगा दिया है।'

'आपदा के ऊपर एक और आपदा'

यूक्रेन में चल रहा युद्ध और इसके कारण लगाए गए प्रतिबंध वैश्विक भुखमरी के पहले से मौजूद संकट को और बढ़ा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन ने पाया था कि 'दुनिया में लगभग तीन में से एक व्यक्ति (2.37 अरब लोगों) के पास 2020 में पर्याप्त भोजन नहीं था'। पिछले दो सालों में, बड़े पैमाने पर कोविड-19 महामारी, जलवायु परिवर्तन, और संबंधित व्यवधानों के कारण बढ़ी खाद्य क़ीमतों के चलते स्थिति और ख़राब हुई है।

संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम के कार्यकारी निदेशक डेविड एम. बेस्ली ने कहा कि 'यूक्रेन [युद्ध] ने एक आपदा के ऊपर एक और आपदा खड़ी कर दी है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से इस तरह की कोई मिसाल नहीं मिलती है।'

बेस्ली ने चेतावनी दी कि, 'अगर आपको लगता है कि अब हमें धरती पर नर्क मिल गया है, तो आप तैयार हो जाइए।

यूक्रेन पर अलग-अलग राय होने के बावजूद, यह स्पष्ट है कि दुनिया भर में अरबों लोग भुखमरी के इस संकट से पीड़ित होंगे जब तक कि युद्ध और प्रतिबंध समाप्त नहीं हो जाते।